Bhram Rishi KrishanDutt Ji Maharaj Patrika Febraury 2013

यौगिक प्रवचन/फरवरी 2013

॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभो ! जिस मानव का अन्तःकरण लोभ, मोह के कारण हमारे शरीर का जो छेदन, हमारे जीवन का जो छेदन हो रहा है उसको हम पुनः से जीवन को ऊँचा बनाने के लिए उस मार्ग को हम अपनाना चाहते हैं। प्रभो ! जिससे हमारे यह जो छेदन हैं यह दूर हो जाएँ और हम प्रभो जैसे आपके द्वार से आए थे उसी प्रकार आपको प्राप्त हो जाएँ। हे भगवन् ! हम जो नाना प्रकार की उस भयंकर अग्नि में परणित हो गए हैं हम जो आलस्य और प्रमाद में इतने चले गए हैं, उस आलस्य और प्रमाद को हम दूर करके उस पथ को अपनाना चाहते हैं जिस पथ के अपनाने से आपकी और हमारी, दोनों की सन्धि हो जाए।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(यौगिक प्रवचन माला भाग-9- -प्रवचन 6 अक्टूबर 1972)

अंक : 485 समग्र अंग : 560
वर्ष : 41 समग्र अंग : 47

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	1
2.	प्राणत्व	पूज्यपाद-गुरुदेव	3-19
3.	आदि ब्रह्मा जी द्वारा याग की विवेचना	पूज्यपाद-गुरुदेव	20-23
4.	महर्षि वशिष्ठ मुनि का जन्म	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-29
5.	आत्मा का मार्ग	पूज्यपाद-गुरुदेव	30-31
6.	Two Souls in one Body	पूज्यपाद-गुरुदेव	32-35
7.	दान, पुस्तकों की सूची व सूचना इत्यादि		36-40

चतुर्वेद ब्रह्म-पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यापाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की सद्प्रेरणा एवम् शुभ आशीर्वाद से श्री गाँधी धाम समिति (पँजी.) प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म-पारायण महायाग का आयोजन श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, बागपत के प्राँगण में दिनाँक 17 मार्च 2013 से 24 मार्च 2013 तक बड़े हर्ष एवं उल्लास के साथ आयोजित कर रही है, जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गांधी धाम समिति (पँजी.)

शृङ्गीऋषि बेवसाईट
www.shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

प्राणत्व

जीते रहो !

देखो मुनिवरो ! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद-मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद-मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से ही उस मनोहर वेद-वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान-विज्ञान का प्रायः वर्णन किया जाता है। यह जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है यह परमपिता परमात्मा की अमूल्यता है, अथवा उसी की चेतना से यह सँसार चेतनित हो रहा है। यह उसी की चेतना है जो एक-एक परमाणु को ले करके, अणु तक उसको क्रियाशील बना रही है। वह चैतन्य सत्ता है जिसको हमारे ऋषि मुनियों ने, तपस्वियों ने अनुसन्धान करते हुए यह कहा है कि नाना गतियों वाला जो यह ब्रह्माण्ड है इसमें.....जिससे मानव के हृदय में एक उज्ज्वलता छा जाती है और उसी की महत्ता, उसी की ओजस्विता मानव के हृदय में समाहित हो जाती है, जिस महत्ता से यह मानव क्रियाशील होता है। एक मेरी प्यारी माता अपने पुत्र के निर्माण करने के लिये अपने जीवन को ऊँचा बनाने के लिए तत्पर होती है।

प्रभु का सुन्दर विज्ञान

पुत्रों ! मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब माता सोमलता विराजमान हो करके अपनी लोरियों का पान कराती रहती थी और अपने प्यारे पुत्र के श्रोत्रों में दर्शनों की चर्चाएँ देती रहती, और वह जो दर्शनों का विवेचन है, वह जो बालक के हृदय में प्रवेश कर जाता है तो माता अपने को धन्य स्वीकार कर लेती है। आज मैं

इस माता के विज्ञान का वर्णन करने नहीं आया हूँ। मैं तुम्हें विज्ञान के क्षेत्र में नहीं ले जाऊँगा। क्योंकि विज्ञान भी विशाल वन है। ज्ञान भी वन है। जब मैं विज्ञान के वन में चला जाता हूँ तो विज्ञान की एक-एक वार्ता स्मरण आने लगती है। प्रभु का कैसा सुन्दर निर्माण है? कैसा सुन्दर विज्ञान है? माता के गर्भ-स्थल में एक बिन्दु से मानव के शरीर की रचना होती है। परन्तु वह जो एक बिन्दु है, उस एक ही बिन्दु में उस बालक का निर्माणवेत्ता का सर्वत्र आकार विराजमान है। एक परमाणु है उस परमाणु के साथ में नाना परमाणु गति करते हैं। परन्तु उतनी ही परिधि में रहते हैं जितने कि वह आकार का बनना है, उसी प्रकार के परमाणु उसके समीप आने प्रारम्भ हो जाते हैं।

मेरे पुत्रों ! आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। हमारे ऋषि मुनियों में नाना प्रकार की वार्ता प्रारम्भ होने लगी, तो आज मैं तुम्हें ऋषि मुनियों के उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ; जहाँ वेद ही वेद की चर्चाएँ होती रहती हैं। जहाँ और चर्चाएँ नहीं होती केवल प्रकाश की ही चर्चाएँ होती रहती हैं। मैं उस गृह में ले जाना चाहता हूँ जहाँ गर्भाशय से लेकर के बाल्यकाल पनपता है तब तक वेद की ही चर्चा बालक के श्रोत्रों में प्रवेश कराई जाती है।

हे माँ ! तू जब पितृ-याग करती है तो पितर-याग करने से पूर्व तू अपने बालक को पितर-याग की शिक्षा प्रदान कर देती है। आज मैं तुम्हें महर्षि जमदग्नि आश्रम में ले जाना चाहता हूँ। जमदग्नि आश्रम में क्या पिप्पलाद आश्रम में और भी दार्शनिकों का जैसे भृगु मुनि का समाज था। महात्मा भृगु मुनि महाराज महर्षि दधीचि आश्रम में नाना चर्चाएँ होती रहतीं, नाना विवेचना होती रहतीं। **आदि आचार्यों ने यह कहा है कि वेद में जो ज्ञान है वह मानव के निर्माण से ले करके और मानव की स्थूलता से ले करके व्यापकता में एक-एक कण का ज्ञान कराता है।** जैसे मानव का एक बिन्दु है और बिन्दु के रूप में यह मानव शरीर है, यह परमाणुओं का शरीर कहलाता है, इन

परमाणुओं को स्थिर करने वाला कौन है? जीवात्मा है। **परमाणुओं को स्थिर करने वाला यह जीवात्मा है, गति देने वाला प्राण है और विभक्त करने वाला इसमें मन माना गया है। तो ये तीन वस्तुएँ हैं जिनसे मानव का जीवन स्थिर रहता है।**

पञ्च महाभूत ही पञ्च प्राणत्व हैं

पिप्पलाद ऋषि जब आदि ब्रह्मचारियों से कहते हैं कि हे ब्रह्मचारियों ! **यह परमाणुओं का शरीर है।** परन्तु उन परमाणुओं की गति परिवर्तित होती रहती है। जब स्थूल नहीं होता ये ही परमाणु माता के गर्भ-स्थल में विचरण करते हैं, और उन्हीं में बालक का निर्माण होता रहता है। कहीं माता के विचारों को ले रहा है, कहीं वह पूर्व जन्मों के चित्त में सँस्कार लिए रहता है, उदान प्राण के साथ में यह आत्मा से मिलान करता रहता है। **मानो प्राणत्व को ले करके नाना प्रकार के प्राणों का विभाजन करके मानव शरीर माता के गर्भ-स्थल में निर्मित हो रहा है।** आगे वेद का ऋषि कहता है, वेद का आचार्य कहता है "ब्राह्मणे लोकाः हिरण्यं गच्छं ब्रह्मे व्यापकम् "मेरे प्यारे ! जब यही परमाणु था शरीरधारी बन करके देवता बनता है, देवी बन रहा है और पितर-याग हो रहा है उन्हीं परमाणुवादों से जो परमाणु प्राण की परिधि में गति करता है। मनस्तत्व उसके समीप विराजमान है। चित्र का मण्डल उसके साथ में विराजमान है। तो जब वह गति करता रहता है, तो वह देवता बनता है, देवत्व को प्राप्त होता हुआ वही परमाणुवाद पँच महातत्वों में ओत-प्रोत रहता है। तो वेद का ऋषि जब यह विचारता है तो यह कहता है कि हे ब्रह्मचारी ! कवन्धी ! यह जो हमारा जीवन है, हमारा जो मनस्तत्व है, हमारी जो धाराएँ हैं वे पँच महाभूतों में ओत-प्रोत रहती हैं, गति करती रहती हैं। तो ये पँच प्राणत्व माने जाते हैं।

मेरे प्यारे ! अन्तरिक्ष में शब्द कैसे रहता है? कैसे गति करता है? वायुमण्डल में कैसे गति करता है? अग्नि के परमाणु कैसे गति

करते हैं? वायु के परमाणु किस प्रकार गति करते हैं और पार्थिव तत्वों से कैसे इसका आकार निर्माण होता है? आज मैं तुम्हें इस धारा के कुछ सूक्ष्म वाक्यों को प्रकट कराना चाहता हूँ।

दो प्रकार की धाराएँ

वेद का ऋषि कहता है कि यह ज्ञान और विज्ञान वेद की आभा में निहित रहता है। परन्तु रहा यह कि प्रत्येक ऋषि की आभाओं में, प्रत्येक प्रकार का अर्थ वेदों में होता है, दो प्रकार की धाराएँ होती हैं। एक तो रूढ़ि होती है और यौगिक होती हैं। यौगिक जो शब्द हैं वे तो याग के आँगन में ले जाते हैं, गम्भीरता में ले जाते हैं। जो रूढ़ि शब्द होते हैं, वेद में वह रूढ़ि से वेद में साहित्य स्वीकार कर लेता है। यदि मानव रूढ़ि में न जाएँ और यौगिकता में परणित हो जाए-आज तो मानव वेद के अक्षरों को, वेद-मन्त्र को लेकर के उसकी सन्धि केवल ज्ञान के द्वारा की जाती है, और होनी चाहिए। मैं इसका विरोधी नहीं हूँ। परन्तु **जो वेद के रहस्य को जानना चाहता है, वह समाधि में इसके रहस्य को दृष्टिपात कर सकता है** क्योंकि वह जो वेद है, वेद नाम हमारे यहाँ प्रकाश को माना है, वेद नाम उसको माना है जो एक-एक परमाणु में गति आ रही है और परमाणु में जब गति आ रही है, उनमें जो ऋत् और सत् गमन कर रहा है, **सर्वत्र वेद का जो ज्ञान है ऋत और सत् की व्याख्या कर रहा है।** जो ऋत और सत् की व्याख्या हो रही है, ऋत् और सत् का गान गाया जा रहा है। पृथ्वी के गर्भ में चले जाओ, नाना प्रकार के खनिज के ज्ञान में परणित हो जाओ, नाना प्रकार के जलाशयों में चले जाओ। जलाशयों में जो सृष्टि का वर्णन आता है, उस सृष्टि का वर्णन करने लगो। यहाँ से सूर्य-मण्डल की उड़ान उड़ो, सूर्य-मण्डल के प्राणी को दृष्टिपात करो वहाँ के विज्ञान को दृष्टिपात करो। चन्द्र लोकों में चले जाओ वहाँ का जो वातावरण है, उसको दृष्टिपात करो। एक मानव उड़ान उड़ता है ध्रुव मण्डल की, ध्रुव मण्डल की यात्रा कर रहा है और यात्रा करके कहाँ जाता है।

उदान प्राण की गति

जिस प्रकार यह मानव का शरीर यह आत्मा को त्यागता है तो चित्त, आत्मा और उदान तीनों एकता में हो करके, मानो वह **जो चित्त का मण्डल है, उसमें सूक्ष्म शरीर रहता है, उस चित्त के मण्डल को ही सूक्ष्म शरीर कहा जाता है।** उसको ले करके उदान प्राण जाता है, और जाकर के जैसा चित्त का सँस्कार होता है, प्रारम्भ में अँकुर होते हैं, अथवा सँस्कार होता है, उसी सँस्कार के आधार पर योनि की प्राप्ति होती रहती है। मेरे प्यारे ! देखो, उसी प्रकार जैसे यह मृत्यु समय में शरीर को त्यागते समय यह उदान प्राण जाता है। उसी प्रकार योगी जब योगेश्वर में रमण करता है, जब योगी इन पाँचों प्राणों को एक सूत्र में लाता है तो यह उदान प्राण है, यह एक सूत्र में हो करके यह लोक लोकान्तरों को दृष्टिपात करता है, यह लोक लोकान्तरों में चला जाता है। ''जब यह लोकों की उड़ान उड़ने लगता है तो सँकल्प मात्र से यह जो उदान प्राण है आत्मा और चित्त का जो मण्डल है उस चित्त के मण्डल को ले करके वह उन लोकों में गमन करता है।''

मेरे प्यारे ! जैसे मानो ''उदगत् प्रभे वृत्तं ब्रह्मे लोकाः हिरण्यं गच्छत् प्रभे वृत्ताः सूर्यस्यं लोकाः हिरण्यं ब्रह्मे वृत्ताः सूर्याः चन्द्रमसा वृत्ते केतु हिरण्यं ब्रह्मे कृताः।'' यह जो उदान प्राण है। यही तो लोकों में जा करके कृति को दृष्टिपात करता है, **कृति क्या है?** वह ऋत् और सत् गति कर रही है, वह लोक लोकान्तर एक दूसरे से स्थिर हो रहा है, एक प्राणी दूसरे प्राणी से वार्ता प्रकट कर रहा है, एक दूसरा प्राणी प्राणी के अन्तरात्मा को जानने का इच्छुक रहता है। वेद का ऋषि कहता है, आज का यह वेद-मन्त्र घोषणा कर रहा है कि वह जो उदान प्राण है वही उदान प्राण सूर्य लोकों में, चन्द्र लोकों में, बृहस्पति लोकों में, ध्रुव लोकों में क्या आकाश गँगा में, अनेक आकाश गँगाओं में, स्वदेस आकाश गँगा में, सौमभानु आकाश गँगा में, कृति आकाश गँगा में, सोम गँगा में, प्रेत केतु गँगा में

नाना गँगा में उदान के द्वारा वह योगी लोक लोकान्तरों को दृष्टिपात करने लगता है।

मेरे प्यारे ! यह तो ऊँचे स्तर की वार्ता प्रकट कर रहा हूँ। आओ ! मैं तुम्हें उदान के लिये एक वाक्य और प्रकट करना चाहता हूँ। उदान प्राण को कौन जानता है। मैंने दोनों प्रकार की वार्ता तुम्हारे समक्ष प्रकट की है, और वे दोनों वार्ताएँ यह हैं कि वेद-मन्त्र में दोनों प्रकार के अर्थ हैं। एक तो रूढ़ि कहलाती है और एक सुयौगिकता कहलाती है। कोई भी मानव जब वेद के गम्भीर रहस्य को जानना चाहता है, वेद की ऋचा के गर्भ में जाना चाहता है वह मन से विचारता हुआ मन और प्राण को एक सूत्र में लाता है। मन और प्राण को एक सूत्र में लाकर के वेद के मेधावी रहस्य को जानता है, **और जब यह मन, प्राण और बुद्धि और नाग प्राण की पुट लगा करके जब यह उस क्षेत्र में जाता है मेधावी से ऋतम्भरा के क्षेत्र में चला जाता है,** और जब ऋतम्भरा के क्षेत्र में जब जाता है तो उदान, चित्त, आत्मा और प्रकृति का मूल सूक्ष्म तत्व है, ये चारों एक क्षेत्र में आकर के उदान प्राण के द्वारा, उदान प्राण पर अपना आधिपत्य करता हुआ प्राण इस आत्मा को योगी जैसे यह मृतक शरीर को जब मानव का समय पूर्ण होता है, जिस प्रकार यह उदान अपने आत्मा और चित्त को ले करके ऋतम्भरा क्षेत्र में क्या, देखो जैसे बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा, प्रज्ञा इन तीनों धाराओं को ले करके जब यह चतुर्थ धाराओं में यह इस शरीर को त्याग भी देता है, आत्मा को इसमें से निकाल लेता है, आत्मा को दूसरों के शरीरों में प्रवेश कर लेता है। जल के ऊपर अपने शरीर को त्याग देता है। वही जो उदान प्राण है, वही इसको आवागमन करके वह अन्तरिक्ष में देवत्व आत्मा में गति करता है। वहाँ की विचारधारा को भी वह ग्रहण कर लेता है। क्योंकि सूक्ष्म-मण्डल इसके साथ में रहता है। क्योंकि उदान प्राण जो है वह चित्त के मण्डल के साथ में है। चित्त का जो मण्डल है, उसमें नाना आकाश गँगाएँ साक्षात्कार हो रही हैं, और नाना जो दिव्य आत्मा अन्तरिक्ष में गमन करती हैं वे इसको साक्षात्कार हो रही हैं, उनका

साक्षात्कार होने के नाते यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का उदान प्राण के साथ यह चित्त के मण्डल को साथ में लेकर के शरीरों में प्रवेश कर सकता है, और यही उदान प्राण है जब वह जो माता का गर्भ है, वह रूढ़ि कहलाता है और जब यह यागेश्वर बन करके अन्तरिक्ष में गमन करता है, द्यु लोकों में गति करता है, लोक लोकान्तर चित्त के मण्डल में दृष्टिपात आने लगते हैं। वह जो चित्त का मण्डल है वह उदान प्राण का मण्डल के साथ सँकल्प मात्र से माना गया है। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा था कि वास्तव में जो उदान का जो विषय है यह इस पृथ्वी पर विराजमान हो करके नाना प्रकार की औषधि विराजमान हैं। उनका पान किया जाता है और उनका पान करके स्थूल अन्न को न ले करके सोमलताओं के रस को पान करके इन मण्डलों को जाना जाता है। यह वैसे नहीं जाना जाता।

विदुषी माताएँ

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ! जब मुझे इसका स्मरण कराते थे। जब माता अपनी लोरियों का पान कराती थी तो माता सोमलताओं के रस का पान करती थी। आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ महात्मा अगस्त मुनि की माता सुनेतलता ने यह विचारा कि मुझे अपने गर्भ से विवेकी बालक को जन्म देना है। तो प्रथम माह में **'गोवेश्चर'** एक औषधि होती है उसका पान करती थी उसके पश्चात् नाना प्रकार की औषधियों का पान करके अपने पुत्र को पनपा रही है। मानो कन्दराओं में विराजमान हो करके ओजस्वी बना रही है। अपने पुत्रों को वही माता अपने पुत्र को गर्भ से पृथक हो करके स्वयँ रसों का पान करती, स्वयँ वनस्पतियों का पान करती जैसे **सेलखण्डा, सुबरी, अनवेता, सोमलता, सोमभ्रिति, चक्रेणी** इनको अग्नि में तपा करके, रस बना करके माता इनका पान करती थी। जिससे बालक का जो चित्त का मण्डल है यह विशाल बन जाता है।

आज मैं माताओं के सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ, तुम्हें यह विचार देने के लिये आ पहुँचा हूँ कि गर्भस्थ पुत्र के साथ

माता की कितनी सहकारिता होती है। कोई भी मानव सोम का पान करना चाहता है, कोई भी मानव प्राण के मण्डलों में जाना चाहता है उसमें माता की महत्ता की आवश्यकता है। हे माता मन्दालसा ! तू अपने प्यारे पुत्रों को पाँच वर्ष में ब्रह्मवेत्ता बनाती है। तू कैसी विदुषी है? मेरे प्यारे ! यह वेद का ज्ञान है, वेद का ज्ञान यह यौगिक है, जो माता यौगिक अध्ययन करके, औषधियों का पान करके अपने पुत्र को महान् बनाती है, ओजस्वी बनाती है, महत्ता में परणित करा देती है। वह वेद के यौगिक अर्थों को जान करके रूढ़ि को शान्त करके यौगिकता में परणित कर रही है।

प्राण और अपान

विचार विनिमय केवल यह देने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव प्राणत्व को जानना चाहता है। **प्राण और अपान की गति को जानने वाला प्राणी पृथ्वी के गर्भ के खनिज को जानता है कि पृथ्वी में किस प्रकार का परमाणु कहाँ है।** मुझे वह काल स्मरण है जब भगवान् राम यह विचारते थे। महर्षि भारद्वाज की विज्ञानशाला में और माता अरून्धती और वशिष्ठ मुनि महाराज के चरणों में विराजमान हो करके यह अनुसन्धान करते रहते थे कि मैं इस अहिल्या (पृथ्वी) के गर्भ को जानना चाहता हूँ।

तो मेरे पुत्रों ! मुझे वह काल स्मरण है। भगवान् राम अहिल्या के गर्भ को जान रहे हैं। अपान और प्राण दोनों को सँयम में ला करके, दोनों को एक सूत्र में ला करके, दोनों का मिलान करके। इस पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार का खनिज है नाना प्रकार का क्या, दस-दस योजन तक आन्तरिक स्थल में जो खनिज है। किस प्रकार का खनिज है वह? उसके गर्भ में परणित हो करके उसी प्रकार के बाह्य यन्त्रों का वह निर्माण कर रहा है। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रकट नहीं करूँगा।

व्यान और समान

अपान और प्राण को जानने वाला पृथ्वी को जानता है। **व्यान और समान वाला जो प्राणी है वह अग्नि के गर्भ को जानता**

है। जल के गर्भ को जानता है। अग्नि के गर्भ में किस प्रकार का परमाणु है, कहाँ से यह तेज आता है इस तेज का मूलक सूर्य है अथवा नहीं। सूर्य भी नहीं होता उसका जो मूलक है वह सूर्य चक्र में वह स्वतः तत्व माना जाता है। उसका जो तेजोमय वह ब्रह्म है जिसका तेज इस सँसार में ओत-प्रोत होता है। इस ब्रह्माण्ड को तेजस्वी बनाता है तेजस्वी बना करके वह तत्वों को जानता है, उसके मूल को जानने लगता है। उसकी मौलिकता क्या है? अग्नि सूर्य को सूक्ष्म बना देती है। **यह अग्नि सूक्ष्मता को समाप्त नहीं करती केवल स्थूलता को समाप्त करती है।** जब मानव एक सँसार का आकार बन जाता है उसका सँस्कार कर देते हैं। अग्नि उसकी स्थूलता को समाप्त कर देती है परन्तु उसमें जो सँस्कार बन गया है, मिलान बन गया है, उसको वह समाप्त नहीं कर सकती। इसी प्रकार वैज्ञानिक उड़ान उड़ता हुआ कहता है कि एक मानव पृथ्वी के गर्भ को लेकर के उनका सँस्कार करके गूँथ करके बना देता है। उसको जब अग्नि में प्रवेश करते हैं तो अग्नि उसको तपस्वी और तेजस्वी बना देती है परन्तु उसको पृथक नहीं कर सकता। इससे यह सिद्ध होता है कि सँस्कार वस्तु को अग्नि समाप्त नहीं कर सकती। **सँस्कारों का मिलन कैसे होता है?** व्यान के द्वारा, व्यान और समान जब दोनों एक सूत्र में हो जाते हैं, तो यह पृथ्वी के गर्भ को जान करके, अग्नि के गर्भ को, जल के गर्भ को जानने लगता है। **सूर्य की किरणों में क्या हो रहा है?** सूर्य की किरणें आ रही हैं, लोकों को तपा रही हैं भौतिक विज्ञानवेत्ता नहीं जान सकता। परन्तु जो व्यान और समान प्राण को जानता है और उनकी सन्धि बनाता है। **यह साधना का विषय है।** यह व्याख्या का विषय नहीं रह जाता।

वह समय दूर चला गया

वह समय दूर चला गया जब इस सन्धि का मिलान करते रहते थे। आज तो केवल व्याख्या ही व्याख्या रह गई है। आज तो शब्दों का प्रतिपादन मात्र रह गया है। आज तुम्हारी यह प्रेरणा आ रही है, मैं इन प्रेरणाओं के साथ में इन वाक्यों को प्रकट कर

रहा हूँ। परन्तु यह तो बेटा ! भयँकर वनों में विराजमान होकर के जब गुरुओं के चरणों में विराजमान होते थे तब इन प्राणों की सन्धि मिला करती थी। अनुभव करते थे। ब्रह्मरन्ध्र में जाते थे। सम्प्रज्ञान में चले जाते थे। ब्रह्म समाधि में परिणित हो करके सर्व ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करते रहते थे। बेटा ! आज मैं इस सम्बन्ध में क्या उच्चारण कर सकता हूँ। आज तो मैं एक प्राण की भी व्याख्या पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। क्योंकि ये अनुभव के विषय रह जाते हैं, अनुभव का विषय क्या कि इनका मिलान कैसे किया जाता है। आज तो केवल शब्दों में ही सन्धि का उच्चारण किया जाता है। मानो रात्रि और प्रातः का मानो सन्धिपात होता है। तो उनका काल आ जाता है। इसी प्रकार जब मन और प्राण की सन्धि कर लेते हैं तो आनन्द को अनुभव करते रहते हैं। परन्तु आनन्द का अनुभव होता है जैसे समान आनन्द में गति कर रहा है परन्तु जब उसको आनन्द में दृष्टिपात किया जाता है तो उसमें वह गति नहीं आ पाती। वह अनुभव के विषय में गति करने लगते हैं।

आग्नेय लोकों की उड़ान

आज का विषय क्या है? बेटा ! मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर में यह उच्चारण कर रहा हूँ। नित्य प्रति यह प्रश्न तुम मुझसे क्यों कर रहे हो? मैं अभी तक नहीं जान सका हूँ। परन्तु कोई बात नहीं। जब तुम्हारा यह प्रश्न रहता है, तो जितना मैं जानता हूँ, उतना उत्तर देने में मुझे कोई सन्देह नहीं है। परन्तु ये अनुभव के विषय हैं। बेटा ! वाणी से मैं सन्धिपात का वर्णन कर सकता हूँ कि जब ब्रह्मरन्ध्र में मिलान मिल ही जाती है। सन्धम् ऋत् होता रहता है। मुनिवरो ! देखो व्यान और समान को जानने वाला, इन दोनों का मिलान करने वाला इनके मूल तत्वों को जानता है। मैंने तुम्हें अग्नि का वर्णन कराया था कि वह जो गार्हपत्य वैष्णव नाम की अग्नि है नाना प्रकार की जो अग्नियाँ हैं इनके गर्भ को भली भाँति जानता है। इनके विज्ञान को जानता है। व्यान, समान प्राण पर आधिपत्य करने वाला प्राणी

पृथ्वी के आँगन में मानो पार्थिव तत्वों की उड़ान नहीं उड़ रहा है **वह आग्नेय लोकों की उड़ान उड़ता है, जितने भी अग्नि तत्व वाले लोक-लोकान्तर हैं उसमें मानव का आवागमन बन जाता है।**

वायु तत्व लोकों में गति

बेटा ! मैं इस विषय में विशेष चर्चा देने नहीं आया हूँ। मैं तुम्हें उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ प्राणी यज्ञ करता है। अब मैं तुम्हें वायु तत्व वाले लोकों की चर्चा कर रहा हूँ। जितने भी वायु प्रधान लोक-लोकान्तर होते हैं। वह वायु शरीराम् रहते हैं। वायु तत्व वाले लोक लोकान्तर हैं वे गति कर रहे हैं। वहाँ जिसको हम उदान प्राण कहते हैं जो चित्त के मण्डल के साथ में गमन करता हुआ देखो वह मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा के क्षेत्र में गति करता हुआ वह चित्त में समावेश हो करके तब उदान प्राण गति करता है। तो जितने वायु तत्व वाले लोक लोकान्तर हैं, अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं, बेटा ! ऊँची से ऊँची उड़ान जितनी भी आकाश गँगाएँ हैं। **प्रकृति के क्षेत्र में जितने भी वायु तत्व प्रधान लोक हैं उदान प्राण को जानने वाला और चित्त मण्डल और उदान की सन्धि करने वाला प्राणी वायु तत्व के लोकों में गति करता है।** जहाँ भौतिक विज्ञान नहीं जा पाता। भौतिक विज्ञान को स्वप्न भी नहीं आता। वहाँ उदान प्राण को जाननेवाला योगेश्वर गति करता है। उससे सन्धिपात करने लगता है। जल से उसको विभक्तता हो जाती है इसीलिये वायु से इसका सम्बन्ध है। क्योंकि वह इतना सूक्ष्मता को प्राप्त हो जाता है कि जल में गति करता है तो जल उसे अपने में धारण नहीं कर सकता (अर्थात् उसे डुबा नहीं सकता।) अग्नि पर गति करता है तो अग्नि उसे शान्त नहीं कर सकती, अग्नि में गमन करने के पश्चात् भी वह उसे दमन नहीं कर सकती, **मान लो उदान प्राण वाला जो प्राणी है वह वायु तत्व लोकों में गति करने वाला बनता है।**

बेटा ! आज मैं योगेश्वरों की चर्चा नहीं देता। वह काल बहुत दूरी चला गया जब एक-एक मन्त्र को विचारते थे और रूढ़ि को

पृथक करते थे, और यौगिकता को अपनाते थे। बेटा ! **वेदों में ऋषियों की चर्चाएँ नहीं परन्तु उन तत्वों के गुणों की चर्चाएँ होती रहती हैं। गुणों के आधार पर जिनका नाम इन्द्र है।** देखो, वेद में वनस्पतियों से लेकर करके माता के गर्भ-स्थल तक और माता के गर्भ-स्थल में जो एक बिन्दु आता है, उस बिन्दु में कितने परमाणु हैं? कौन-कौन सा परमाणु कहाँ-कहाँ गति करता है, कितने परमाणु हैं जो परिक्रमा करते हैं। जैसे मधु मक्खी होती है, एक मधु मक्खी विशेष होती है उस मक्खी की नाना मधु मक्खी परिक्रमा करती हैं परन्तु उतने ही क्षेत्र में रहती हैं। इसी प्रकार मानव का जो सुकर्म जाता है उदान की धारा को ले करके वह शब्द द्यु लोक को जाता है और जब द्यु लोक को जाता है तो उस शब्द के साथ में मानव का चित्र जाता है।

शब्द व चित्रों का दिग्दर्शन

मेरे प्यारे ! मुझे वह काल स्मरण है कि एक समय मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के द्वारा पहुँचा तो वहाँ सोमभानु ऋषि विराजमान थे और गुरुदेव के द्वारा प्रश्न कर रहे थे कि महाराज मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरा जो प्रत्येक शब्द अन्तरिक्ष में जा रहा है और प्रत्येक शब्द में चित्र जा रहा है मैं उन चित्रों का दिग्दर्शन करना चाहता हूँ। मेरे प्यारे ! उन चित्रों को कौन ज्ञानी दृष्टिपात करता है? जो व्यान और समान प्राण की सन्धि बनाना जानता है। उससे सन्धि मिलाई और प्रत्येक शब्द के, उसी रूप के और उसी आकार के जितना चित्रण अन्तरिक्ष में हो रहा है उनका वह दृष्टिपात कर रहा है। **उनको दृष्टिपात करके सूक्ष्म शरीर वाली जो आत्माएँ हैं उनका भी चित्रण हो रहा है।** जब ऊर्ध्वा गति में जाता है तो कहता है कि हे भगवन् ! मैं जानना चाहता हूँ कि **यह चित्र है इन चित्रों में से जो चित्र निकलते हैं उनमें जो व्यापार करते हैं उन चित्रों का समावेश कहाँ होता है?** मैं उन समावेशों को जानना चाहता हूँ। उस समय वह ऋषि कहता है कि तुम चित्त के मण्डल में पहुँचो और उड़ान करते जाओ, **जब व्यान को चित्त के मण्डल में ले जाओगे तो चित्त में जो जन्म**

जन्मान्तरों के सँस्कार विराजमान होते हैं उन सँस्कारों के साथ में जो अँकुर होते हैं उन अँकुरों के चित्र बनते हैं, चित्रों का निर्माण होता है। चित्त के क्षेत्र में मानो उदान प्राण को ले करके मेधावी की सहकारिता करके अन्तरिक्ष में जाता है, तो वायु तत्व को ले करके आ जाता है। वहीं समापन होता रहता है और उसका समापन होने के पश्चात् जब हम समापन की चर्चाएँ करने लगते हैं तो विचार आता है मुनिवरो ! वहाँ जो वे चित्र जाते हैं वहाँ उन चित्रों का समावेश हो जाता है, उसको मानो **महा-मण्डल** कहते हैं। वहाँ वह मण्डल कहलाता है, प्रकृति का जहाँ प्रलय काल में प्रकृति प्रभु के गर्भ में रहती है। प्रभु के गर्भ में रह करके शून्य अवस्था को प्राप्त होती है। वहाँ उदान प्राण में वह सृष्टि दृष्टिपात आने लगती है। आज मैं उस क्षेत्र पहुँचना नहीं चाहता हूँ, मैं उस महान् विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूँ, वह तो भयँकर वन है **मैं भौतिक विज्ञानवेत्ताओं, यौगिक चर्चा कर रहा हूँ।**

अन्तरिक्ष की वार्ता

मेरे प्यारे ! वायु तत्व प्रधान लोकों में जब प्रवेश कर जाता है, उस मण्डल में प्रवेश करके महा-मण्डलों में प्रवेश करता हुआ वहाँ मानव को उदान, समान, व्यान, प्राण और अपान इन पाँचों प्राणों की सन्धि बन करके और चित्त के मण्डल में से यौगिक के मस्तिष्क में जो ब्रह्मरन्ध्र है उसमें पुष्पाँजली नामक स्थान है जो ऋतम्भरी और कितम्भरी मानो दोनों नाड़ियों का मिलान हो करके ब्रह्मरन्ध्र में मिलान होता है और पाँचों प्राणों के साथ में चित्त के मण्डल से योगेश्वर **जो अन्तरिक्ष में ऋषि मुनि वार्ता प्रकट करते हैं उन वार्ताओं को भी योगी अपने ब्रह्मरन्ध्र के द्वारा उनकी वार्ता भी आनी प्रारम्भ हो जाती है।**

निर्विकल्प यौगिक समाधि

आज मैं बेटा ! बहुत ऊँची उड़ान उड़ने चला गया हूँ। यह उड़ान उड़ना मेरा कर्त्तव्य नहीं था। **यह उड़ान तो विशाल उड़ान है,** वह उड़ान तो उस काल की है जहाँ शब्दार्थ साथ में विराजमान हों, जहाँ साधक विराजमान हों। जो इन प्राणों के ऊपर स्वयँ मनन करने वाले हों, सन्धिपात

करने वाले हों, ऐसा जो विचार है यह मानव के द्वारा होना चाहिए। हम अपने विचार को बहुत सूक्ष्मता में ले जाते हैं तो वहाँ ये वाद नहीं रहते, वहाँ अपनापन नहीं रहता, वहाँ मृत्यु नहीं रहती, वहाँ स्थूलता नहीं रहती, वहाँ सूक्ष्म से सूक्ष्म वाद मानव के मस्तिष्क में आ जाता है। जब 'विवेकम ब्रह्मो' जब ''विवेका वृष्टम ब्रह्मे'' देखो यह जगत समाधि को हम निर्विकल्प यौगिक समाधि में परणित हो करके वेद की दोनों प्रकार की आभाओं को हम जानने लगते हैं।

वेदों में विषय - निर्माण से मोक्ष तक

मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा था, आज उस विचार को मैं पुनरुक्ति करना चाहता हूँ। हम यह उच्चारण कर रहे थे कि माता के गर्भ-स्थल में, वेद में है क्या? वेद के विषय को तुम जानना चाहते हो। मैं संक्षिप्त सा उत्तर देना चाहता हूँ और वह देना यह है **कि माता के गर्भ-स्थल में जो औषधियों का रस जाता है। औषधियों के रस के साथ में मानव का चित्र जाता है, और माता का चित्र भी वहाँ विराजमान है, उसी चित्र के साथ में बालक का निर्माण होता है।** जिन परमाणुओं से बालक का निर्माण होता है, उन परमाणुओं से उसकी बुद्धि का निर्माण होता है, कौन-कौन से परमाणुओं से बुद्धि, कौन से मेधावी बुद्धि बनती है, कौन से परमाणुओं से ऋतम्भरा बनती है, कौन से परमाणुओं से प्रज्ञा बनती है। ये चारों धाराओं का निर्माण इन परमाणुओं से होता है। **ये परमाणु औषधियों से उत्पन्न होते हैं कुछ अन्तरिक्ष से लेते हैं, कुछ नाना अन्नों से लेते हैं।** वह अन्नाद मानो जो गौ नाम का पशु है नाना प्रकार की औषधियों को पान करता है, वह मानव के शरीर में, माता पिता के शरीर में जा करके मन्थन होता है। वह परमाणु वीर्य तत्व रजस्तत्व रूपों में हो करके माता के चित्रों के साथ में उनके चित्रों का निर्माण होता है। उतने आकार का होता है मानो उन वनस्पतियों का वर्णन माता के शरीर में कैसे चित्रण बनता है? कैसे जाता है? शब्दों के चित्र कैसे अन्तरिक्ष में जाते हैं? कौन सी अग्नि ले जाती है? कौन सी वायु

ले जाती है? जिसमें ये पँच महाभूत हैं **इन पँच महाभूतों से सँसार का निर्माण होता है।**

यह तत्व क्या है? आत्मा का ज्ञान क्या है और परमात्मा कैसे सन्तान (विस्तार) कर रहा है? यह वेदों में विषय आया है, और इन्हीं विषयों के आधार पर वेद कहलाता है। क्योंकि **वेद नाम प्रकाश का है।** जितना भी वायुयान है, जितना चन्द्र लोकों में यानों से जाना है, जितना भी यातायात है, वह पृथ्वी में गति करने वाला हो, अन्तरिक्ष में गति करने वाला हो जितना भी यह ज्ञान और विज्ञान इस सँसार में यह सर्वत्र ज्ञान वेदों में है। यही उसका विषय है। इन विषयों के साथ में मानव का निर्माण कैसे होता है? और किन-किन आकृतियों से निर्माण हो करके कौन से विचार धारा वाला बनता है? ये सब विषय रूढ़ि नहीं कहलाते। ये यौगिक कहलाते हैं। जितने भी परमाणुओं के रूपान्तर होते हैं वे यौगिक होते हैं और रूपान्तरों से उन विषयों की पुष्टि होती है। इसलिये **वे जो रूपान्तर हैं वे रूढ़ि कहलाती हैं और अन्तिम जो मन्थन है, अन्तिम जो विचार है वह यौगिक कहलाता है** और भी मन्थन किया जाता है वह प्राणत्व कहलाता है, और भी मन्थन किया जाए तो वायुत्व कहलाता है, और भी मन्थन किया जाता है तो यह उदानत्व कहलाया है, और भी मन्थन किया जाता है तो मोक्ष प्राप्त हो जाता है।

योगेश्वर बनने के लिए प्रेरणा

तो यह है आज का हमारा विचार। आज मैं साधकों की चर्चा करने लगा था, सन्धियों की चर्चा करने लगा, मैं सन्धियों की चर्चा करने नहीं आया हूँ। **विचार विनिमय क्या कि प्रत्येक स्थलों में रमण करते रहें, आनन्दित होते रहें, योगेश्वर बनते रहें और योगेश्वर मौन होने से बनेंगे।** हम केवल स्थूलता से, निन्दा से, घृणा से कदापि भी महत्ता के अर्थों को प्राप्त नहीं होते। हम मेधावी में जा करके यौगिक जानें। क्योंकि वेद का जो विचार है, विषय है यह यौगिक कहलाता है। हमें यौगिकता में जाकर के वेद को

विचारना है। वेद के मन्त्र का जो मानव विभाजन करता है वह मन और प्राण की सन्धि तो होनी ही चाहिए। मन और प्राण की सन्धि वाला जितना होगा वह कुछ न कुछ यौगिकता में जाएगा, और जो पाँचों प्राणों की सन्धि वाला प्राणी होगा वह यौगिक रहस्यों को अच्छी सुन्दर प्रकार से जानेगा **जो उदान और चित्त के मण्डल को इस शरीर में देखो, प्रसारण करना, इसमें प्रवेश करना व्यापी करना यह जब उदान प्राण और चित्त के मण्डल में यह गति आ जाती है तो वेद के पूर्ण रहस्य को योगेश्वर जानने लगता है।**

आज मैं उन क्षेत्रों में जा रहा था। **एक-एक वेद मन्त्र तुम्हें सँसार की गाथा का वर्णन कर रहा है।** वही वेद-मन्त्र माता के गर्भ की चर्चा कर रहा है। वही वेद-मन्त्र योगी को लोकों में गमन करा रहा है। वही वेद का मन्त्र योगी को उदान और चित्त के क्षेत्र में जाता हुआ वायु लोकों में गमन करा रहा है। वही वेद-मन्त्र तुम्हें महत्तत्त्व से मिलान करा देता है। परिणाम है कि एक यौगिक है, एक मानो रूढ़ि है। एक महायोगी से कई प्रकार की धाराएँ तुम्हें वर्णन की हैं। आज मुझे इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है। मैं अपने प्यारे महानन्द जी से उच्चारण कर रहा था कि तुम अपने विचारों को प्रकट करो परन्तु मेरे पुत्र ने नाना प्रश्नों की झड़ियाँ लगा दीं, नाना प्रश्न किये। आज मैं इन प्रश्नों के उत्तरों में चला गया।

आज का हमारा विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान करते हुए **हम वेद के मूल्यों को जानने वाले बनें।** एक मानव वेद मन्त्र को जान करके, पृथ्वी में गमन करने वाले यानों को जानता है। वाहनों को जानता है। देखो, कहीं मानव जब यौगिकता में जाता है वह अन्तरिक्ष में जाने वाले यानों का निर्माण करता है, और वही मानव और भी इस परमाणु के क्षेत्र में जाता है। स्थूलता में वह वायुमण्डल में क्या एक यन्त्र में विराजमान हो करके 72-72 (बहत्तर-बहत्तर) लोगों का गमन करता है, और वही जो 72 (बहत्तर) लोकों का गमन करता

था। भौतिक विज्ञान से वह यदि उदान और प्राण के साथ में उदान प्राण को लेकर के चित्त के मण्डल को लेकर के अँकुरों में परिणित होता है तो नाना आकाश गँगाएँ उनका खिलवाड़ प्रतीत होने लगती हैं। सर्वत्र वायु पर उसका आधिपत्य हो करके उसको आभा में परिणित करता हुआ, वह योगी सँकल्प मात्र से आकाश गँगाओं की उड़ान उड़ रहा है। **सँकल्प मात्र से ही वह लोक-लोकान्तर उसके चित्त के मण्डल में दृष्टिपात आ रहे हैं, उसमें अग्नि का प्रवाह नहीं केवल प्रकाश ही प्रकाश रहता है, वहाँ स्थूल अग्नियाँ नहीं होती, स्थूल वायु नहीं होता, वहाँ जलाशय स्थूल नहीं होते, वहाँ सर्वत्र ब्रह्माण्ड सूक्ष्म रूप में दृष्टिपात आने लगता है।**

यह है आज का हमारा विचार। बेटा ! यह अध्ययन था, किसी काल में था, जब मैं तुम्हें यह वाक्य प्रकट कराता था कि तुम उदान और चित्त के क्षेत्र में ऐसे प्रवेश करो। बेटा ! वह क्रिया तुम्हें स्मरण भी होगी, वह काल भी तुम्हें स्मरण होगा। आज मैं कहाँ तक इस क्षेत्र में अपने विचार प्रकट करूँगा। **इससे आगे का जो विषय रहता है वह अनुभव का विषय है। यह तो आपात काल है इसमें कोई वाक्य प्रकट नहीं किया जा सकता।**

आज का विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, नाना प्रकार की उड़ान उड़ते रहें। वेद का ऋषि तो नाना उड़ान उड़ रहा है, वह नाना परमाणुओं को, विज्ञान को जानता हुआ, लोकों में गमन करता हुआ, स्थूल सँसार को जानता हुआ बेटा ! इस सँसार सागर से पार होने का प्रयास करता है। यह है बेटा ! आज का वाक्य। अब मुझे समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। अब वेदों का पाठ होगा।

दिनांक : 5 मार्च, 1976
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

॥ ओ३म् ॥

आदि ब्रह्मा जी द्वारा याग की विवेचना

वेद का ऋषि यह कहता है कि जितना भी विचार है, जितना भी शब्द है, उस शब्द का आकार प्रत्येक मानव के गृह में-गृह में परणित रहता है, वह शब्द गृह में विराजमान रहता है। मुझे बहुत पुरातन काल की वार्ता स्मरण आ गई। एक समय महर्षि सुकेता मुनि महाराज भ्रमण करते हुए एक पर्वतों की कन्दराओं में एक आसन लगाकर विराजमान हो गए। विराजमान होते ही ऋषि के मस्तिष्क में सुन्दर-सुन्दर विचारों की उपलब्धि होने लगी। क्योंकि वे स्वयँ भी जिज्ञासु थे और जिज्ञासु के साथ-साथ उनके द्वारा दर्शनों की आभाओं का जन्म होने लगा। जब आभाओं का जन्म होने लगा तो इतने में अगस्त्य मुनि आ गए। उनसे उन्होंने कहा कि प्रभो ! मैं स्वयँ तो जिज्ञासु था। परन्तु इस आसन पर मेरे अन्तर आत्मा में सुन्दर-सुन्दर भावना क्यों उत्पन्न हुई? इन तरंगों का मस्तिष्क में जन्म क्यों हो गया? क्या मेरे कोई किन्हीं जन्मों के संस्कारों की उद्बुधता हो गई है? उन्होंने कहा कि नहीं ऋषिवर ! हे जिज्ञासु ! तुम स्वयँ जिज्ञासु हो, ब्रह्मचारी हो, ब्रह्म की तुम्हें पिपासा है, दर्शनों की तुम्हें पिपासा है, यहाँ किसी काल में महर्षि अंगिरा ऋषि ने तप किया था और तप करने के पश्चात् उन्होंने दर्शनों पर विचारा, मानवीय दर्शन उनके समीप रहता था और लगभग उन्होंने 82 वर्ष तक यहाँ कोई मिथ्या वाक्य उच्चारण नहीं किया। तो मेरे प्यारे ! जब यह विचार उनके मस्तिष्क में आया तो ऋषि आश्चर्य से चकित हो गए और पूछा महाराज कितना समय हो गया। उन्होंने कहा कि अँगिरा ऋषि को यहाँ करोड़ों वर्ष हो गए, जब उन्होंने यहाँ तप किया। उन्होंने पूछा कि महाराज उसके पश्चात् कोई और ऋषि

तपस्या नहीं कर पाया इन शिलाओं पर तब उन्होंने कहा कि उसके पश्चात् यहाँ और भी ऋषि आये हैं। उन्होंने भी तप किया है। जिन्होंने भी तप किया है उनके विचार इस वातावरण में रमण कर रहे हैं और उनके विचारों से ही तुम्हारे मस्तिष्क में एक आभा की प्रतिभा का जन्म हो गया है। उस आभा की प्रतिभा के जन्म होने का परिणाम यह है कि तुम्हारे जीवन में एक आभा की उपलब्धि हो करके तुम उन्हीं परमाणुवाद में रमण कर गए हो जहाँ तुम्हारा दर्शन तुम्हारे समीप आ जाएगा। विचार विनिमय क्या कि हमारा मानवीय दर्शन बहुत ऊर्ध्वगति में जाने वाला है। हमें मानवीय दर्शन के ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए। मानवीय दर्शन क्या है? मैंने बहुत पुरातन काल में इसकी चर्चा की है। **मानव का मानवीय दर्शन यह है "मानव की अपनी अन्तरात्मा को जानने का नाम मानवीय दर्शन कहलाता है।"**

आओ मेरे प्यारे ! विचार विनिमय यह कि यह मानव के विचारों का एक याग है। जहाँ मानव भौतिक याग करता है समिधा के द्वारा, घृत के द्वारा तथा जहाँ साकल्य के द्वारा याग करता है वहाँ विचारों का भी याग होता है और उन विचारों के याग में वातावरण परिवर्तित हो जाते हैं। उस वातावरण में देवताजन रमण करते हैं। इस सँसार को यदि ऊँचा बनाना है तो इतना गम्भीर उद्देश्य हमारे समीप रहता है कि हम सदैव कर्त्तव्यवाद में रमण करते चले जाएँ। जहाँ कर्त्तव्यवाद रहता नहीं और अधिकार रह जाता है वहाँ का वातावरण अशुद्ध हो जाता है, वहाँ के वातावरण में रक्त भरी क्रान्ति के परमाणुओं का जन्म हो जाता है और उससे यह सँसार दूषित बन जाता है।

मैं तुम्हें यह वाक्य प्रकट कराने जा रहा था कि मानव का विचार इतना ऊर्ध्वगति में जाना चाहिए। गृह आश्रम में प्रविष्ट होने वाले प्राणी को अपना जीवन कितना शुद्ध बनाना है? अपने मानवीय दर्शन पर अधिकारी बनना है। तुम्हें यह प्रतीत होगा जब माता अरुन्धति और वशिष्ठ दोनों विराजमान होते तो लोकों की चर्चा करते थे, विज्ञान

की चर्चाएँ करते। वे कहा करते कि अरुन्धति के साथ में वशिष्ठ मण्डल हैं, वशिष्ठ से ऊर्ध्वगति में रहने वाला जेठाय (ज्येष्ठा) नक्षत्र से ऊर्ध्वगति में पुष्य नक्षत्र है और पुष्य नक्षत्र की परिधि में रहने वाला स्वाति है। इन लोकों का परस्पर क्या सम्बन्ध है? ये विवेचनाएँ पति-पत्नी की होती थीं। अन्तरिक्ष में तारामण्डल विराजमान हैं, अपना प्रकाश दे रहे हैं। पति-पत्नियों का विचार विनिमय चल रहा है और आँगन में दार्शनिक विचार विनिमय पान करने के लिए विराजमान हैं। हमारे यहाँ परम्परा यह है कि हम सदैव अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहते हैं। मानव के समीप मानव का उद्देश्य रहना चाहिए। **मानव का उद्देश्य है अपनी प्रतिभा को ऊँचा बनाना, प्रतिभाशाली बनना।**

यागों का क्रम

आदि ब्रह्मा ने यह कहा कि याग करो। याज्ञिक बनो। हे ब्रह्मचारियो ! इस भौतिक याग को करो। सबसे प्रथम तो परमाणुवाद से इस गृह के वातावरण को सुगन्धित कर दो, इसका वातावरण सुगन्धित हो जाए। उसके पश्चात् तुम विचारों का याग करो। उसको पांचिक-याग कहते हैं। उनके पश्चात् तुम अतिथि-याग करो। कोई भी अतिथि तुम्हारे समीप आए उससे कुछ वार्ता लो, अपनी दो, उसको अन्नादि की प्राप्ति कराओ। अतिथि याग के पश्चात् तुम गोमेध-याग करो।

गोमेध-याग किसे कहते हैं? इन्द्रियों पर संयम करना। इन्द्रियों को गो कहते हैं। गोमेध-याग करो। उसके पश्चात् अश्वमेध-याग करो। अश्वमेध-याग का अभिप्राय कि राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। क्योंकि अश्व नाम राजा का, मेध नाम प्रजा का है वैदिक साहित्य में। इसके पश्चात् अजामेध करो। अजामेध क्या होता है? तुम सँसार के विज्ञान को जानो। परमाणुवाद को, नाना यन्त्रवाद को जानो। तुम्हारा विज्ञान इतना ऊँचा होना चाहिए जिससे तुम्हारा यातायात इस पृथ्वी से दूसरे लोकों में भी होना चाहिए। सूर्य मण्डलों तक मनुष्यों का यातायात होना चाहिए। उसको कहते हैं अजामेध याग। **अजा नाम पशु को भी कहते हैं, अजा नाम वह भी होता है जो अपनी इन्द्रियों को वश में करता**

हुआ अजेय बन जाता है। जिसे सँसार विजय नहीं कर सकता। उसके पश्चात् आदि ब्रह्मा ने कहा है अजामेध के पश्चात् तुम देवी याग करो। देवी नाम प्रकृति का है, इसके ऊपर तुम्हारा इतना आधिपत्य होना चाहिए जिससे तुम प्रकृति को सुगमता से जानते हुए इसके ऊपर (1) बुद्धि, (2) मेधा, (3) ऋतम्भरा, (4) प्रज्ञा इन चार प्रकार की धाराओं को जान करके इसके ऊपर संयमी बनो।

तो मेरे प्यारे ! यह नाना प्रकार के यागों का वर्णन आदि ब्रह्मा ने किया है सृष्टि के प्रारम्भ में। यहाँ पितृ याग का भी वर्णन है। आज मैं अधिक विवेचना देने नहीं आया हूँ। कल मुझे समय मिलेगा तो कल पितृ याग की चर्चाएँ करूँगा। आज का विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए विचारों का याग करते चले जाएँ। आदि ब्रह्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में याग को उत्पन्न किया। ''यागं ब्रह्मे कृताः घृतं अग्निः'', सँसार अग्नि की पूजा करता है। अग्नि देवी है और यह कैसी अग्नि है जो सँसार का शोधन करती है। याग करने से द्युलोक को परमाणु जाते हैं, शुद्ध परमाणु अन्तरिक्ष में जाते हैं। प्रत्येक समिधा में घृत होता है उस घृत के परमाणु अन्तरिक्ष में रमण करते हैं। इन सबका समावेश हो करके वृष्टि प्रारम्भ हो करके नाना प्रकार की वनस्पतियों का जन्म हो करके हम सँसार सागर से पार होने का प्रयास करें।

यह है आज का वाक्य। अब समय मिलेगा तो कल कुछ पितृ याग की चर्चाएँ भी करूँगा। पांचिक यागों की चर्चाएँ भी कल करूँगा। मुझे आदि ब्रह्मा की चर्चाएँ स्मरण आ रही हैं। आज भी मैं उनके वाक्यों के अनुसार अपने विचारों को प्रकट कर रहा था। कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा अब वेदों का पाठ होगा। 'ओं देवं सर्वा निधि आभ्याम्, ऋषि गायन्ताः माम ऋषि आपाहाम्।। ओं मया तनु गतं सर्वे सु आभ्याम्, ऋषि इदं सर्वा इदं मयाहाम्।''

अच्छा भगवन् !

श्री श्यामलाल जी गर्ग

स्थान : कलकत्ता

॥ ओ३म् ॥

महर्षि वशिष्ठ मुनि का जन्म

बेटा ! **हमारे यहाँ जब मुनियों के जन्म होते थे तो माताएँ प्रायः आयुर्वेद का अध्ययन करतीं यह माता के लिए अनिवार्य था** जिससे माता का जीवन सर्व श्रेष्ठ बनता चला जाए। परन्तु रहा यह वाक्य ऐसा जो बालक होता है, ऐसा बालक देखो मुनिवरो मन्सा पापी नहीं होता, ऐसा बालक दुर्व्यवहारी नहीं होता। ऐसा बालक देखो माता के गर्भ को और अपने जीवन को पवित्र बनाने वाला होता है। कणाद और व्यास की भाँति ही वह अपने जीवन को पवित्र बनाने वाला होता है। कणाद और व्यास की भाँति ही वह अपने जीवन को पवित्र बनाने वाला होता है। इसीलिए बेटा ! जो मानव सँसार में मन्सा पापी होते हैं जिन्हें विचार नहीं उनके मातृ सँस्कार अशुद्ध होते हैं। **सँसार में तीन प्रकार के सँस्कार मानव लेकर के आता है।** सबसे प्रथम सँस्कार मानव के पूर्व जन्म के होते हैं, दूसरे सँस्कार माता के पैतृक सँस्कार होते हैं और तीसरे सँस्कार मानव समाज के होते हैं, वातावरण के होते हैं। इसीलिए तीन प्रकार के सँस्कार मानव के होते हैं। इसमें आयुर्वेद कहता है कि मानव के यह तीनों सँस्कार बड़े सौभाग्यशाली प्राणी को प्राप्त होते हैं। पूर्व जन्म का सँस्कार भी पवित्र हो, माता पिता का संग भी पवित्र हो, अपना मित्र-मण्डल भी पवित्र हो तो वह मानव तो बड़े सौभाग्यशाली होते हैं परन्तु इनमें से यदि मानव के पूर्व जन्म के सँस्कार श्रेष्ठ हैं, माता के पैतृक सँस्कार सुन्दर नहीं हैं तो वह सँस्कार कुछ दब जाते हैं और कुछ समय के पश्चात् उनका प्रादुर्भाव होता है। परन्तु कुछ ऐसे होते हैं जिनका सामाजिक पद्धतियों में, सामाजिक जो विचार होता है समाज जो होता है जहाँ मित्र-मण्डल अशुद्ध होता है, वह दुरात्मा ही होता है तो माता के पैतृक सँस्कार, समाज का अशुद्ध जो वातावरण

है उसमें बहुत ही ऐसे विरले होते हैं जो समाज में जाकर वह अपनी पद्धति से दूर चले जाते हैं। ऐसी प्राणी सूक्ष्म होते हैं। इसीलिए माता के पैतृक सँस्कार पवित्र होने चाहिए क्योंकि सँस्कार में दुराग्रह और दुराचार करना यह मानव का कर्त्तव्य नहीं है इसमें मानव की जीवन की हानियाँ होती हैं जिससे वायुमण्डल, प्रकृतिवाद अशुद्ध हो जाता है।

पवित्रता ही जीवन है

आज हमें यह विचारना है कि कैसे प्रत्येक वाक्य पर अपनी बुद्धि से विचार-विनिमय करना है। ऋषि ऐसा कहते हैं कि मानव को अपनी जीवन की धाराओं को लेखनी बद्ध करना चाहिए परन्तु जिस समय ऋषि अपनी लेखनी बद्ध करते हैं लेखनी बद्ध करने से यह विचार लेते हैं कि शुद्ध विचारों को लेखनी बद्ध करना है वे मानव बड़े सौभाग्यशाली होते हैं ऐसे मानव बिरले ही होते हैं। अन्यथा मानव अपने जीवन की महान से महान भूल को लेखनी बद्ध कर देते हैं। मुनिवरो देखो ! मैं अधिक चर्चा प्रकट नहीं करने आया। वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि हमें विचारना है। हम इन वाक्यों पर और टिप्पणी किसी काल में करेंगे। आज का समय इतना आज्ञा नहीं दे रहा। आज का विचार केवल यह है कि अपना ग्रह, आसन तथा वातावरण पवित्र तब बनेगा जबकि हमारे द्वारा मन्सा पाप नहीं होगा, हमारे पास अशुद्ध वाक्य नहीं रहेगा। अशुद्ध वाक्य उन प्राणियों के हृदय में होता है जो रसना और लिंग के पुजारी होते हैं, सुन्दरी के पुजारी और अविद्या के पुजारी होते हैं। उनके यहाँ का वातावरण सदैव अशुद्ध रहता ही है। इसीलिए यह दोनों पूजनीय नहीं होने चाहिएँ। पूजनीय और ही होने चाहिएँ। व्यापकता का पूजन होना चाहिए जिससे इस सँसार में एक महानता का प्रसार होता रहे, यह समाज और वातावरण पवित्र बनते रहें। इसीलिए हमारे यहाँ बेटा ! यज्ञ को श्रेष्ठ माना है, क्योंकि यज्ञ का वातावरण भी माता के गर्भाशय से ही यज्ञ की

उत्पत्ति होती है। इसीलिए आज हमें विचारना है, हमें इन वाक्यों पर बहुत विचार-विनियम करना है। आओ मेरे प्यारे ऋषिवर ! मैं आज यह क्या वाक् प्रकट करने चला गया। मैं यह वाक् उच्चारण कर रहा था कि हम 9 मास और 9 दिवस तक ही क्यों उत्पन्न होते हैं। इसका अभिप्राय यह कि प्रत्येक प्रवृत्तियों का निर्माण प्रत्येक मास में होता है इसीलिए 9 द्वार होते हैं, अष्टचक्र होते हैं इनका निर्माण इतने ही समय में होता रहता है। अब मैं बेटा ! इन वार्ताओं की अधिक चर्चा नहीं देना चाहता हूँ। वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि माता को आयुर्वेद का ज्ञान होना चाहिए और पवित्र-वाद होना चाहिए। मानव के द्वारा ऐसी पवित्रता होनी चाहिए जिस पवित्रता से हमारे जीवन में महान् धाराओं का जन्म होता है जिससे हमारे जीवन का एक महान् मौलिक रहस्य, एक मात्र जीवन का एक मौलिक रासनिकता का एक रहस्य कहलाया गया है। यह है बेटा ! आज का वाक्।

सुयोग्य माता

मैं यह कहा करता हूँ कि बेटा ! सँसार में यदि हमें कुटुम्ब बनाना है तो माताओं को जगत का कुटुम्ब बनाना है और ऐसे बालक को जन्म देना चाहिए कि जहाँ जाए अपनी और अपनी माता की कुशलता को सदैव जानकारी में लाने वाला हो। वह जगत माता बन जाती है। वह एक व्यक्ति की माता है जहाँ बालक जाता है, मानो बुद्धिमान जाता है वही माता की कुशलता बेटा ! मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं आयुर्वेद का अध्ययन करने के पश्चात्, दर्शनों का अध्ययन करने के पश्चात्, 64 प्रकार के यज्ञों का कर्मकाण्ड का अध्ययन करने के पश्चात् जब मैंने सर्वस्व राष्ट्र में भ्रमण किया परन्तु जहाँ जाता वहाँ माता और मेरी-दोनों की कुशलता को स्वीकार किया जाता तो

मेरी माता जगत बाता बन गई। केवल एक पिता ही ऐसा पुरुष रह गया कि जो उसका पति था अन्यथा सर्वज्ञ की माता ही माता थी। इसीलिए सुयोग्य माता की यही कुशलता (निपुणता) होती है। विचारक पिता की यही कुशलता होती है कि उनका नामोकरण सँसार में कितना विशाल बन जाता है। यह है बेटा ! आज का वाक्। अब मैं इन वाक्यों को विराम दे रहा हूँ।

माता का आहार

वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हमें विचारना है कि यदि **हम वातावरण और प्रकृति के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करने वाले बनेंगे तो यह समाज पवित्र बन जाएगा।** यह विज्ञान पवित्र बन जाएगा। इसमें क्या विशेषता है? वेद हमें आयु देने वाला है, पवित्रता का प्रसारण करने वाला है। मुनिवरो ! देखो मुझे समय मिलेगा तो बेटा मैं चर्चाएँ करूँगा जब आयुर्वेद का कोई वाक् आयेगा कि **किस-किस मास में माता को कौन-कौन सा आहार करना चाहिए** और किस-किस मास में कौन-कौन से अन्न का पान करना चाहिए? तो इसका मैं संक्षिप्त सा परिचय देता रहता हूँ वह परिचय यह है कि **प्रारम्भ मास** में माता को प्रायः अप्रेत मधुर वस्तुओं का पान करना चाहिए। मधुर जितने द्रव्य होते हैं उनका आहार करना चाहिए और मधुरता के साथ में कुछ कसैले पदार्थ उसमें मिश्रित होने चाहिएँ और **द्वितीय मास** में रसदायक पदार्थ होने चाहिएँ जैसे वनस्पतियों का रस है जैसे मानो शेल-खण्डा है, संखाहोली है, सोमभानि है, ब्रह्मकेतुनी है इन चारों औषधियों का रस ले लेना चाहिए और इनका रस सायंकाल को इनको जल में अप्रेत करके चन्द्रमा की कान्ति में अस्वत कर देना चाहिए और प्रातःकाल इसका पान करना चाहिए और **तृतीया मास** में कुछ उष्ण औषधियाँ होनी चाहिएँ, जैसे संखाहोली होती है, सामभूमि

होती है, रामभानि होती है इन औषधियों को अग्नि में तपाकर इनको पान करना चाहिए। इसी प्रकार **चतुर्थ मास** में जिन औषधियों से बुद्धि की वृद्धि होती है जैसे हमारे यहाँ सहदेई होती है, शंखानि होती है चाक्रानि होती है गली होती है इनका रस बनाकर माता को पान करना चाहिए। इसी प्रकार **पंचम मास** है इसमें चन्द्रमा की सूर्य की किरणों में तपाया हुआ जल होना चाहिए, कैसे पदार्थ होने चाहिएँ, गोमूत्र लेकर के उसको अग्नि में तपा कर के उसमें कुछ द्रव्य पदार्थ होने चाहिएँ, कैसे हों? मानो देखो केशधानी होती है, सुहानी होती है, चंपानी होती है, तेलकेतु के पुष्प होते हैं उन्हें अग्नि में तपाकर के पान करना चाहिए। ऐसी जब माताएँ होती हैं, वे अपने गर्भ से ऋषि को जन्म देती हैं इसी प्रकार **छटे मास** में जैसे सेलहानिनी होती है और चंपानी होती है, जैसे क्रान अन्तु, साननेतु इनका रस इनको अग्नि में तपाकर के इनकी स्यायी बनाकर के इनको मिष्ठान में साग बनाकर गो-घृत सहित इसको गोदुग्ध के साथ पान करना चाहिए। इसी प्रकार **सप्तम् मास** में जैसे हृदय ग्राही औषधि होती है हृदय ग्राही कौन सी औषधि होती है, जिससे हृदय का सुन्दर निर्माण होता है। वे हृदय ग्राही औषधियाँ जैसे गोकलु (गोखरु) होते हैं, गोग्रिनी होती है, पापड़िक (पिन-पापा) औषधि होती है इन तीनों औषधियों को लेकर, गो दुग्ध होता है, उनको छाया में सुखाकर, छाया में शुष्क करने के पश्चात् सूर्य के साथ में इनको खरल करके इनको पान करके इससे सप्तम मास में जो पूर्ण होता है, उससे पूर्ण होता चला जाता है। इसी प्रकार **अष्टम मास** में माता को स्वाद केतु का जल, वर्षा का जल होना चाहिए उसको अग्नि में तपा कर के उसमें नाना द्रव्य होते हैं, जैसे मनक्रन होते हैं, मानो क्रोण केतु होती है, जो द्रव्य होते हैं मानो मेवाएँ होते हैं इनको पान करना चाहिए, इससे हृदय पवित्र होता है और हृदय विशाल होता है।

बेटा ! **नवम मास** में तो देखो अन्न की ब्रही अस्त होनी चाहिए जैसे चावल हैं मानो जैसे तन्दुल हैं परन्तु तन्दुल को तपा करके तन्दुलों को अप्रेत बनाकर के उसमें नाना प्रकार की क्रीणी होती हैं, अनेक नेतु होती हैं उसमें गो घृत होता है उस पात को पान करना चाहिए। बेटा ! अब वह **9 दिवस** बचते हैं। उन 9 दिवसों में तो बेटा ! औषधियों का ही पान करना चाहिए। जितने नौ मास में जिन-जिन औषधियों का रस प्रत्येक दिवस में पान करना चाहिए। इससे उस पात का पान करना चाहिए।

यह कार्य किसने किया? यह महर्षि वशिष्ट मुनि की जो माता सौमभूनि थी, मुनिवरो यह सब उसी ने किया था, उन्हीं का निर्माण किया हुआ एक वाक्य है जो मैंने आज बेटा ! तुम्हें वर्णन किया। **महर्षि वशिष्ट मुनि महाराज का निर्माण इन औषधियों द्वारा ही हुआ था।** इन्हीं विचारों से पनपा गया। परन्तु इस प्रकार यह मैंने इस विज्ञान की चर्चा की। मैंने अधिक चर्चा प्रकट नहीं करनी है क्योंकि यह विज्ञान तो इतना विशाल है वार्ता में से वार्ता आती रहती है परन्तु देखो इन औषधियों के गुण मैं किसी काल में प्रकट करूँगा। क्योंकि समय आज्ञा नहीं दे रहा है। आज का वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। अब वेदों का पाठ होगा। मुनिवरो इसमें बहुत सी टिप्पणियाँ और रह गई हैं, किसी काल में प्रकट करूँगा। अब आज का वाक् समाप्त है, अब वेदों का पाठ होगा।

धन्य हो.....

अच्छा भगवन् !

पूज्यपाद-गुरुदेव

(यौगिक प्रवचन माला भाग-7)

॥ ओ३म् ॥

आत्मा का मार्ग

आत्मा का, योग का जो प्रारम्भ है वह बेटा ! **तीन प्रकार के शरीरों को जानने का नाम योग कहलाया गया है।** सबसे प्रथम 1. स्थूल उसके पश्चात् 2. सूक्ष्म और उसके पश्चात् 3. कारण कहलाया गया है। बेटा ! हमारे यहाँ (3) कारण तो ऐसा माना गया है। (1) "जो कारण शरीर है उसमें भी पञ्च-महाभूतों का मिश्रण रहता है क्योंकि वह पञ्च-महाभूतों की सूक्ष्मतम गति कहलाई जाती है।" (2) इसी प्रकार जो सूक्ष्म शरीर है "इसमें जब सतोगुण अधिक प्रबल हो जाता है और जब सूक्ष्म गति इसकी प्राप्त होती है तो यौगिक आत्माओं में रमण करने लगता है।" हमारे यहाँ कुछ ऐसा माना है। (3) मानव की जितनी भी तमोगुण प्रवृत्तियाँ होती हैं उतना ही आवागमन में परणित रहता है। जितनी भी तमोगुण, रजोगुण प्रवृत्तियाँ रहती हैं उतना ही आवागमन निकट होता है। (4) परन्तु जिनका सतोगुणी प्रवाह ऊँचा होता है सतोगुणी की उड़ान अधिक होती है, यौगिक उड़ान उसके साथ में होती है तो कहा करते हैं कि वह उनका जो आत्मा है वह अन्तरिक्ष में मोक्ष आत्माओं, देव आत्माओं के साथ वह रमण करती रहती है। ऐसे आत्मा पुनः संसार में आने के लिए तत्पर हो जाते हैं। तो विचार यह मुनिवरो ! कि कुछ आत्मा ऐसे होते हैं जो मोक्ष के निकट होते हैं **परन्तु जब वह प्रकृति के इस चित्त को भ्रष्ट दृष्टिपात करते हैं उस समय मोक्ष के निकट वाले आत्मा प्रायः संसार में जन्म ले लेते हैं** और वह सँसार में जन्म ले करके संसार में अपना कुछ कार्य करके पुनः उसी गति को प्राप्त हो जाते हैं। क्योंकि यह स्थूल जगत् का जो कर्म है उन आत्माओं को लिपायमान नहीं कर सकता। उन आत्माओं के लिपायमान न होने के कारण इस लोक में ऊँचे से ऊँचा कर्म करके पुनः वे आत्मा उसी गति को प्राप्त हो जाते हैं। क्योंकि उनको रजोगुण और तमोगुण कदापि नहीं व्यापता इसलिए क्योंकि उनको स्वार्थ नहीं होता, वह निःस्वार्थ होते हैं। उनको मुनिवरो ! अभिमान नहीं होता। उनके लिए पर्वत और राजशैया एक सी होती है। ऐसे महापुरुषों को सँसार का कर्म नहीं व्यापता।

मेरे प्यारे ऋषिवर ! महात्मा महर्षि भृगु ने कहा कि आत्मा का जो मार्ग है यह एक ऐसा सूक्ष्म मार्ग है जिसको जानने के लिए तुम्हें अनुभव की आवश्यकता है। प्रायः मानव यह उच्चारण करता रहता है कि आज मैं योग के मार्ग में जाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे महानन्द जी प्रायः प्रश्न करते रहते हैं। आज भी इनका प्रश्न है कि आत्मा की अबाध गति किस प्रकार होती है? हमने बहुत पुरातन काल में अपने प्यारे पुत्र के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा था कि जैसे भौतिक विज्ञानवेत्ता शब्दों के यानों का निर्माण करता है, इसी प्रकार मुनिवरो ! देखो योगी यौगिक क्षेत्र में, योगियों के समाज में विराजमान हो करके वह उस प्राण के द्वारा अव्याहत गति से योगी अपने शब्दों को सँसार में प्रसारण कर सकता है। मेरे प्यारे ऋषिवर ! नारद मुनि भी इस वाक्य को स्वीकार करते थे। यह वैदिक साहित्य हमें बारम्बार आज्ञा देता है।

आज के वेद पाठ में आत्मा का बड़ा सुन्दर विवरण आ रहा था। आत्मा जब इस नाना प्रकार के आवरणों से दूर हो जाता है ये जो आवरण हैं जिनको (1) मल, (2) विक्षेप, (3) आवरण कहते हैं। तीन प्रकार के विक्षेप हैं। जब ये आत्मा से दूर हो जाते हैं तब यह आत्मा का आवागमन, आत्मा की प्रतिभा, आत्मा की उड़ान ऊँची बन जाती है। मेरे प्यारे महानन्द जी यह प्रश्न किया करते हैं कि **हमारी यह जो आकाशवाणी है यह मृत-मण्डल में जाती है,** पृथ्वी मण्डल पर जाती है ऐसा महानन्द जी ने कहा है। परन्तु उनके प्रश्न का उत्तर आज के वेद के पठन-पाठन में आ रहा था। बहुत पुरातन काल में इन्होंने प्रश्न किया। वेद का ऋषि कह रहा है, हे मुनिवरो ! जिसका अन्तःकरण पवित्र होता है इस प्रकृति का आवेश इस प्रकृति के जो (1) मल, (2) विक्षेप, (3) आवरण हैं ये उसको अधिक प्रभावित नहीं करते। तो उनका आत्मा मुनिवरो ! मृत लोक के शरीरों से आत्मा का उत्थान हो करके वह द्यु-लोक में, देवताओं की आत्मा में रमण करता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

(यौगिक प्रवचन माला भाग-9)

Two Souls in one Body

O Sages ! I have just now finished reciting the Vedic Hymns, which are the invaluable treasure of God, and are a source of constant pleasure to the heart and for which we are highly indebted to Him. But there are persons who are not prepared to accept this indebtedness to God. They do not believe in the existence of God and say that the world is functioning automatically by natural laws and there is no God to control them. Such persons are highly mistaken. They must know that when the world is controlled by some laws there must be a controller. But, however, this is not the subject of my talk today. Today, I want to speak something about Yoga.

Yoga is such a gift of God that with the help of it man can reach to any height, and can even attain the Supreme. So the question today before us, is how to acquire the knowledge of that priceless gift-how to be a Yogi? In order to be a Yogi, the first and foremost thing which is required is to mould our mode of thinking. We must find out our defects and weaknesses and must not look to the defects and weaknesses of others. When we shall find out and know all our defects and weaknesses, only then we shall be able to achieve (1) Dharna i.e. steady abstraction of mind, (2) Dhyan i.e. abstract contemplation and (3) Samadhi i.e. perfect absorption of thought into the one object of the Supreme Spirit. When a man practises Dharna, Dhyan and Samadhi, he realized how fast-moving the mind is.

Several questions arise in connection with the practice of Yoga. One of such questions is whether

two souls can exist simultaneously in one single body? Such questions are put forward by only those who are ignorant of the real process of Yogic practice-who simply go on announcing that they are Yogis, but in fact do not know what really Yoga is, and what are the different stages which the soul has to pass in the practice of Yoga. It is nothing but vanity, if a man, who has not practised a constant recitation of the Gayatri Mantra staying at a fixed place, nor has gained accomplishment in the required field, declares that he is a Yogi and that he possesses a complete knowledge of the Divine. So the first thing is that man should know his short comings and then he will be able to realize the vastness of the Universe and to practise Dharna, Dhyan and Samadhi. So we must proceed on this path after reciting Mother Gayatri.

Once dear Mahananda said that the man of today was getting devoid of knowledge day be day and had gone far far away from Yoga. I have seen those days when every man and woman did possess at least some knowledge of Yoga. Where are those days now? I always pray, "O God ! when those days will come again when every man and woman would pronounce the Vedic Mantras from his or her mouth? O God ! a social upheaval is the need of the day. The society of today is full of arrogant persons. But arrogance is the bane of society. It must destroy the man possessing it. So men should be free from arrogance and be full of learning and politeness."

Thus, in order to be a Yogi, a man should first of all drive out arrogance from his mind. Unless a man

shuns his ego and makes himself free from all his defects and weaknesses he can never be a Yogi. After making himself free from all his defects he should practise Pranayam. When the practice of Pranayam matures, the soul by means of the Kumbhak and Rechak exercises of Pranayam reaches the Muladhar Centre and then the man becomes capable of knowing what are the elements which constitute the body and how does the body function. The soul then proceeds further and reaches the Naval Centre which is regarded as the Centre of the body, and there it is felt how vast and wonderful are the tubular organs of the body. Proceeding further the soul realizes such elements which are not visible to the eye. And proceeding on still further the soul reaches gradually the Heart, Nasal, Brahmrandhra and Void Centres. The Yogi then comprehends the infinite creation of God.

How do two souls happen to appear in the same body

O Sages ! My dear Mahanandji once questioned how do two souls happen to appear in one single body. I must say in this respect two souls do never appear in any one body. Then, according to Mahanandji, people naturally ask how does the soul of Mahanandji come in this body? A deep consideration is required to be given in this matter. It is not possible for a man of ordinary learning to go deep into this question. Only a Yogi of high order can comprehend how the soul is functioning and how is the Voice coming out. Today man wants to know all these secrets through his ordinary intellect. But

anybody who has not gone deep into the secrets of Mother Gayatri, brings his throat, his heart and his entire self in close contact with her.

O Sages, Just as a child always longs for its mother-the mother who always caresses the child and sings melodious songs for it while it lies comfortably in the cradle, similarly the soul longs for its mother, the mother who is all-pervading and the creator of the world. The soul has learnt to speak from the songs which it heard from its mother and has been able to live in this world with the help of the nourishment it got from her lap. A man, in order to be a Yogi, must deeply consider over all these matters and then try to know the secrets of the Yogic functions. When a Yogi acquires a complete knowledge of all the different functions, some wonderful changes take place in him. He now becomes able to know all the three forms of the body i.e. the gross, subtle and causal forms, and through the practice of Dharna, Dhyan and Samadhi becomes successful in geeting the Tanmatras (i.e. the five elements in their minute forms) submerged into the mind. The mind gets submerged into the intellect. The intellect gets submerged into the heart. All the objects of the organs of perception and action also get submerged into the heart. And now the soul dominates over all of them and acquires the capacity to leave off the gross body at will and roam over anywhere it may desire, in its subtle body. In this manner, O Sages ! The soul of a Yogi may come in contact with that of another, for a short while-for a few moments only. It does not mean that an ordinary body keeps more than one soul within it.

Pujyapad Gurudev

Yogic Wisdom of the Ancient Rishies.

॥ ओ३म् ॥

श्रद्धा-बोध

परमपिता परमात्मा की सृष्टि का अद्भुत एवम् अद्वितीय ज्ञान ऋषि मुनियों की धरोहर है। ऋषि मुनियों ने अपना त्याग, तपस्या एवम् अनुसन्धान से इस ज्ञान को दुहा है और प्रत्येक प्राणी मात्र के कल्याण के लिए सँहिताओं में भरण कर दिया है। उसी लुप्त होती हुई धारा प्रवाह को पुनः से जागृत करने के लिए महर्षि दयानन्द जी महाराज ने वेदों का प्रचार व प्रसार निरन्तर अपने जीवन काल में किया और उसी ज्ञान ज्योति को ऊर्ध्वा में गमन कराने के लिए पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने यागों की ज्योति को प्रज्वलित करते हुए, वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए समय, काल व भाषा के समयानुसार जन-कल्याण के लिए भावार्थ अपने प्रवचनों में ऋषि मुनियों के जीवन के क्रियाकलाप से समन्वय करते हुए किया है।

इस अलौकिक व अनुपम ज्ञान को अध्ययन करते हुए भाव-विभौर होकर समिति के प्रकाशन मन्त्री **डा. मधुसूदनेश्वर प्रकाश जी** ने प्रकाशन कार्य को और सक्षम बनाने के लिए **1,00,000 (एक लाख रुपये) का सात्त्विक सहयोग** प्रदान किया है। डा. साहब प्रकाशन के कार्य में योजनाबद्ध सुचारु रूप से तन-मन-धन से निरन्तर प्रयत्नशील हैं। ये सँस्कार उनको अपने माता-पिता जी से बचपन से ही धरोहर के रूप में प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। डा. साहब के पिता आदरणीय श्री निरंजन सिंह त्यागी निवासी ग्राम कैथवाड़ी, जिला मेरठ ने अपनी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अपने ग्राम में एक स्कूल की सन् 1964 में स्थापना की और जनसमूह के अथाह प्रेम व सहयोग से तथा

अपने घोर परिश्रम, लगन, कर्त्तव्यपारायणता और निष्ठा एवम् आदर्शों से निरन्तर स्कूल को ऊर्ध्वा गति में ले जाते रहे जो कि आज जनता इन्टर कॉलेज के नाम से अपने आस-पास के क्षेत्र के लगभग एक हजार बाल-बालिकाओं को शिक्षा प्रदान कर रहा है।

स्कूल से प्रधानाचार्य के पद से भार मुक्त होने के पश्चात् आपने अपने को आध्यात्मिकता में संलग्न कर लिया और अपनी भूमि में एक भव्य एवम् विशाल आश्रम का निर्माण करके सभी क्षेत्रवासियों को आर्ष पद्धति की ओर आकर्षित करके जीवन से मुक्त होने का मार्ग प्रदर्शित किया। उसी गति को और ऊर्ध्वा में ले जाते हुए आश्रम को शान्ति कुँज को समर्पित करके तथा लाक्षागृह बरनावा में एक कक्ष का निर्माण कराके स्वयँ स्वाध्याय एवम् योग में अग्रसर हो गये।

त्यागी जी को अपने जीवन को सफल बनाने का सौभाग्य अपने पिताजी पूज्यनीय स्व. बलवन्त सिंह त्यागी के संरक्षण में और पूज्यपाद गुरुदेव के सानिध्य में निरन्तर बना रहा। त्यागी जी के पिता श्री अपने ज्ञान, सहयोग एवम् व्यवहार के लिए समाज में एक आदर्श की स्थापना करके अपने परिवार एवम् समाज को मानव दर्शन में संलग्न कर गये।

समिति निरन्तर सहयोग के लिए परिवार के सभी सदस्यों का हृदय से आभार प्रकट करती है और दीर्घायु, सुख, शान्ति एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से विनय करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री विवेक त्यागी, अल्कापुरी, हापुड़	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री वी.पी. सिंह, वसुंधरा, गाजियाबाद	250 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्रीमती शशि गुप्ता, नोएडा	125 रुपये
डॉ. ओ.पी. आर्य, आगरा	125 रुपये
श्री गुलजार सिंह, जगत पुरी, कृष्णा नगर, दिल्ली	100 रुपये
श्रीमती वीना त्यागी, अलीगढ़।	100 रुपये
श्री राहुल शर्मा, बैंगलोर	100 रुपये
श्री पराग शर्मा, नोएडा	100 रुपये

सूचना

सभी सदस्यों को यौगिक प्रवचन मासिक पत्रिका भेजी जा रही है। पत्रिका प्रत्येक मास की 10\11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी आजीवन/वार्षिक सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में हमें एक सप्ताह के बाद लिखें। सूचना मिलने पर पत्रिका पुनः प्रेषित करेंगे।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, ए-59 पँचशील एन्क्लेव, नई दिल्ली 110017

वैदिक अनुसन्धान समिति के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 800 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए 100 रु. है जिसको आप समिति के पते पर व प्रकाशन मंत्री के पते पर डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पंजी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	50.00
2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	50.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	50.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	50.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	50.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	25.00
9.	धर्म का मर्म	30.00
10.	शंका-निवारण	25.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	25.00
13.	देवपूजा	20.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	110.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	100.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	100.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	20.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	40.00
22.	महाराजा-रघु का याग	25.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	25.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	30.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	25.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	20.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	30.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	30.00
29.	याग-मन्जूषा	25.00
30.	आत्म-दर्शन	25.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	25.00
32.	याग और तपस्या	45.00
33.	यागमयी-साधना	30.00
34.	यागमयी-सृष्टि	25.00
35.	याग-चयन	25.00
36.	दिव्य-रामकथा	100.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	25.00
38.	दिव्य-ज्ञान	35.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	25.00
41.	आत्म-उत्थान	30.00
42.	तप का महत्व	30.00
43.	अध्यात्मवाद	25.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	35.00
45.	वैदिक-प्रभा	30.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	35.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	30.00
50.	आत्मा का भोजन	35.00
51.	साधना	30.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	60.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	60.00
57.	माता मदालसा	40.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	60.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	65.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम्, कर्म भूमि लाक्षागृह	10.00

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य संहीता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जि. बागपत, (उ. प्र.)। दूरभाष : 01234 240395
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। दूरभाष : 0131 2606414
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली। 110017 दूरभाष : 011-26498737
5. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ. प्र.)। दूरभाष : 0120-4165802
6. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ. प्र.) दूरभाष : 9412002233
7. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) दूरभाष : 09412139333
8. श्री विवेक त्यागी, 16, अशोक कॉलोनो, अल्कापुरी, हापुड, (उ. प्र.)। दूरभाष : 0122-2316196
9. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ. प्र.)। दूरभाष : 0120-2642052
10. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110, मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ. प्र.) दूरभाष : 9899228860, 9871367937
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। दूरभाष : 9910589486
12. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ. प्र.) दूरभाष : 9313530505
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष : 011-23282088
14. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
15. मैं. विजय कुमार, हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष : 011-23977216
16. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्य समाज मेरठ शहर (उ. प्र.)।

वर्ष 41 : अंक : 485
फरवरी 2013

मूल्यः
पाँच रुपये

प्रकाशक, मुद्रक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश (प्रकाशन मंत्री वै.अ.स.) द्वारा वैदिक अनुसंधान समिति पंजी०
के लिए नवप्रभात प्रिंटिंग प्रैस, दिल्ली से छपवाकर सी-38,
शिवालिक मालवीय नगर, नई दिल्ली-17 से प्रकाशित।
(अवै०) सम्पादक : डा० मधुसूदनेश्वर प्रकाश, दूरभाष : 26498737

POSTED AT N.D.PS.O ON 10-02-2013
Published on 5th day of the same month